हिंदी पत्रकारिता और विशाल भारत

HINDI PATRAKARITA AUR VISHAL BHARAT

(HINDI JOURNALISM AND VISHAL BHARAT)

Synopsis of the thesis

शोध निर्देशक

डा. ऋषिभूषण चौबे

शोधार्थी

जयप्रकाश मिश्र

हिंदी विभाग

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

हिन्दी पत्रकारिता के विकास में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के योगदान के क्रम में ‘हिन्दी पत्रकारिता और विशाल भारत’ नामक इस शोध प्रबंध में हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में ‘विशाल भारत’ के योगदान का मूल्यांकन, ‘विशाल भारत’ कालीन राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन, ‘विशाल भारत’ की संपादकीय नीति की मीमांसा, साहित्यिक पत्रकारिता की दुनिया में ‘विशाल भारत’ के स्थापित प्रतिमानों का विवेचन किया गया हैं। ‘विशाल भारत’ में प्रकाशित रचनाओं के समग्र अध्ययन को ध्यान में रखते हुए इस शोध प्रबंध का लेखन कार्य़ किया गया है। सुदृढ़ संपादकीय नीति तथा उद्‌देश्यपरक पत्रकारिता के प्रमुख स्तम्भों में ‘विशाल भारत’ की गणना की जाती है। इसलिए आज के दौर में ‘विशाल भारत’ की सम्पादकीय नीतियों, प्रकाशन के उद्‌देश्य तथा तौर-तरीकों का अध्ययन बेहद प्रासंगिक है और उसे शोध का विषय बनाया जाना अतीत से प्रेरणा लेने का कार्य़ करना है। इस शोध प्रबंध के छह सर्गों में हिन्दी पत्रकारिता के ऐतिहासिक महत्व व विकास को बताया गया है। भारत में पत्रकारिता का आरम्भ ‘हिकी गजट’ से माना जाता है। विशाल भारत गाँधीयुगीन पत्र था। इस दौर में भारतीय फलक पर दो नक्षत्र देदिप्यमान थे। राजनीतिक फलक पर गाँधी तो साहित्य व संस्कृति के फलक पर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर चमक रहे थे। ‘विशाल भारत’ के संस्थापक संपादक पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, अज्ञेय, मोहन सिंह सेंगर व श्री राम शर्मा के संपादन में प्रकाशित कविता, कहानी, आलोचना, शोध, संपादकीय नीति संबंधी विचार तथा भाषा, साहित्य, संस्कृति व पत्रकारिता संबंधी विभिन्न लेख भारतीय जनमानस के गुम्फान हैं। उन बिखरे भावों को विविध उपशीर्षक में विभाजित करने का प्रयास इस शोध प्रबंध में किया गया है। यह ऐतिहासिक महत्व का शोध प्रबंध है और 100 साल पुरानी पत्रिका के समस्त अंक तथा उसकी संपादकीय नीतियां इसके आधार है। लगभग एक शताब्दी पूर्व का

मासिक पत्र 'विशाल भारत' (1928-1964) के डाटा की डिजिटल प्लेटफार्म पर उपलब्धता इस शोध का एक महत्वपूर्ण कार्य है। उक्त डाटा के आधार पर समकालीन सामाजिक-ऐतिहासिक बहसों, टिप्पणियों एवं लेखों का तथ्यात्मक विश्लेषण किया गया है। इस शोध प्रबंध में 'विशाल भारत' के तत्कालीन विज्ञापन व निर्धारित दर तथा चित्रों एवं लेखकों की सूची दी गई है, जिसमें पराधीन से स्वाधीन भारत तक का एक ऐतिहासिक अक्स दिखता है।

शोध प्रबंध लेखन से पूर्व 'विशाल भारत' कालीन पत्र-पत्रिकाओं से परिचित होना हमें अत्यन्त आवश्यक था। इसके अलावा हमें यह भी देखना था कि 'विशाल भारत' पर किसने और क्या-क्या कार्य किया ? अनेक पत्र-पत्रिकाओं, शोध ग्रंथों, अनेक प्राध्यापकों व केंद्रीय पुस्तकालयों से सहायता प्राप्त इस विषय पर गहन चर्चा की गयी है। विशाल भारत को केंद्र में रखकर हिन्दी पत्रकारिता की नीति व नैतिकता पर सोआस, लंदन विश्वविद्याल की प्रोफेसर फ्रंचेस्का ओरसीनी, बीबीसी, लंदन के वरिष्ठ पत्रकार शफी जमई, वरिष्ठ पत्रकार व चिंतक वेद प्रताप वैदिक, पद्मश्री डा. कृष्णबिहारी मिश्र तथा वरिष्ठ पत्रकार गीतेश शर्मा के साक्षात्कार को इस शोध प्रबंध में शामिल किया गया हैं। इसमें मेरा पूर्ण प्रयास रहा है कि इस शोध प्रबंध में किसी की छाया न पड़े, यह सर्वथा नूतन और उद्देश्यपूर्ण हो।

अध्यायानुसार सारांश

प्रथम अध्याय - इस सर्ग में हिन्दी पत्रकारिता की ऐतिहासिक भूमि के परिप्रेक्ष्य में 1780 से 1964 (184 वर्ष) तक की पत्र-पत्रिकाओं की विवरणात्मक जानकारी उपलब्ध करायी गयी है। इतने वृहत कालखंड के पत्रों की जानकारी एक जगह उपलब्ध होना, शोध की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की सत्ता भलीभांति स्थापित हो गयी तो इसके दो दशक बाद 29 जनवरी 1780 में

कलकत्ते से पहला समाचार पत्र प्रकाशित हुआ। इस पत्र का नाम 'कलकत्ता जेनरल एडवरटाइजर' अथवा 'हिकी बंगाल गंजट' था एवं जेम्स अगस्ट हिकी इसके संपादक थे। 1780 से 1818 तक भारतीय पत्रकारिता पर केवल अंग्रेज ही छाये हुए थे और इस अवधि में जितने पत्र निकले वे सभी अंग्रेजी में थे। परंतु भारत में भारतीय भाषाई पत्रकारिता की शुरूआत करने का श्रेय राजा राम मोहन राय को दिया जाता है। राजा साहब ने भारतीय भाषा का प्रथम भारतीय पत्र 'बंगाल गजट' 1816 में प्रकाशित किया। 'बंगाल गजट' बांग्ला भाषा का प्रथम साप्ताहिक पत्र था जो किसी भारतीय के देखरेख में प्रकाशित हुआ था। सन 1818 में बैपटिस्ट पादरी जोशुआ मार्शमैन के नेतृत्व में अंग्रेजी व बांग्ला भाषा में पहला मासिक पत्र 'दिग्दर्शन' का प्रकाशन हुआ, जो भारतीय भाषा का पहला मासिक समाचार पत्र था। इसी वर्ष (23 मई,1818) को मार्शमैन ने बांग्ला साप्ताहिक पत्र 'समाचार दर्पण' का भी संपादन किया। सन 1821 में बांग्ला के पहले साप्ताहिक समाचार पत्र 'संवाद कौमुदी' (बुद्धि का चाँद), तथा 1822 में समाचार चन्द्रिका का राजा राममोहन राय के सम्पादकत्व में प्रकाशन हुआ। भारतीय पत्रकारिता के इस क्रम में हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ 1826 से होता है। कोलकाता के आमड़ातल्ला गल्ली से 30 मई, 1826 को हिन्दी पत्रकारिता के आदि पुरुष पंडित युगल किशोर शुक्ल ने 'उदंत मार्तंड' अखबार की शुरुआत की। इस पत्र के बारे में बांग्ला पत्र 'समाचार चन्द्रिका' में 19 मार्च 1826 को एक सूचना प्रकाशित हुई थी। उसमें यह बताया गया था कि नगर में एक नया समाचार पत्र प्रकाशित होने वाला है, जिसके संचालक कानपुर के मूल निवासी श्री युगल किशोर शुक्ल है। उदंत मार्तंड में देश-विदेश, गाँव-शहर, हा़ट-बाजार संबंधी अनेक समाचार एवं सूचवाएं प्रकाशित होती थी। पत्रकारिता के अनुरूप अनाचार, अनैतिकता औऱ अर्थ लिप्सा पर प्रहार करने का उत्तम उदाहरण 'उदंत मार्तंड' ने दिया। डा. अर्जुन तिवारी के अनुसार इस पत्र में गद्य की कई शैलियों का प्रयोग किया गया। इसमें सूचनात्मक शैली, वर्णनात्मक

शैली और हास्य व्यंग्य शैली और पत्र शैली को महत्व दिया गया है। 'उदंत मार्तंड' के प्रकाशन के लगभग 8 दशक के बाद (1900) के दौर को हिन्दी पत्रकारिता का द्विवेदी युग कहा जाता है। यह दौर पत्रकारिता की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। बीसवीं शताब्दी का प्रारंभ अनेक घटनाओं से होता है। देशी घटनाओं में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की उन्नायक संस्था अखिल भारतीय कांग्रेस द्वारा उग्रवाद की शुरुआत, लार्ड कर्जन की त्रुटिपूर्ण नीतियाँ और मुस्लिम लीग का जन्म दिखाई देता है। विदेशी घटनाओं में प्रमुख रूप से सन् 1905 में जापान द्वारा रूसियों की पराजय आदि ने भारतीय चिन्तकों और बौद्धिकों को हिला दिया। इस शताब्दी का आरम्भ हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के शुभागमन के साथ होता है। 1900 में प्रकाशित 'सरस्वती' पत्रिका अपने समय की युगान्तकारी पत्रिका रही है। यह अपनी छपाई, सफाई, कागज और चित्रों के कारण शीघ्र ही लोकप्रिय हो गई। इसे बंगाली बाबू चिन्तामणि घोष ने प्रकाशित किया था तथा इसे नागरी प्रचारिणी सभा का अनुमोदन प्राप्त था। 'सरस्वती' पत्रिका के पद्य, गद्य, काव्य,नाटक, उपन्यास, चम्पू, इतिहास, जीवन चरित्र, पत्र, हास्य-परिहास, कौतूक, विज्ञान, शिल्पकला सभी संपादक के व्यक्तित्व की घोषणा करते हैं। इस पत्र में साहित्य, पुरातत्व, पुस्तक परिचय, चरित्र चर्चा, विज्ञान, आलोचना, विवेचन और प्रकीर्ण शीर्षक पत्र थे। 'सरस्वती' का उद्देश्य हिन्दी भाषी क्षेत्र में सांस्कृतिक जागरण करना था। राष्ट्रीय जागरण तो उसका अंग था। 'सरस्वती' का डंका बजने लगा तो कुछ बर्षों में 'देवनागर','नृसिंह', 'लीडर', 'माधुरी', 'सुधा', 'प्रताप', 'चाँद', 'मदारी', 'मतवाला', 'केसरी', 'अभ्युदय', 'अदिति', 'हंस', 'श्रद्धा', 'कल्याण', 'अलंकार', 'आर्य', 'शक्ति', 'कर्मयोगी', 'भविष्य', 'सैनिक', 'स्वराज्य', 'नवशक्ति', 'नवजीवन', 'भारत', 'नवयुग', 'अर्जुन', 'विचार' आदि पत्र-पत्रिकाओं का अभ्युदय हुआ और इन्होंने हिन्दी पत्रकारिता को उसके उच्चे शिखर तक पहुँचाने के साथ हिन्दी पत्रकारिता के उत्थान एवं स्वाधीनता आन्दोलन को घर-घर पहुँचाने में

अतुल्नीय योगदान दिया। बांग्ला में 'प्रवासी' और अंग्रेजी में 'माडर्न रिव्यू' निकाल रहे रामानंद चट्टोपाध्याय ने 1928 में पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी के संपादन में 'विशाल भारत' का प्रकाशन प्रारंभ किया। 36 वर्षों की लंबी यात्रा के बाद 1964 में यह पत्र सदा के लिए बंद हो गया। उस काल के अन्य प्रमुख पत्रों में 'आदर्श', 'मौजी', 'साहित्य', 'अभय', 'भविष्य', 'आवाज', 'वर्तमान', 'कुमार', 'बलिया गजट', 'सुदर्शन', 'देशभक्त', 'क्रांतिकारी', 'मजदूर', 'रणचंडी', 'चंडिका', 'ज्वालामुखी' आदि शामिल है। बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक को पत्रकारिता का गाँधी युग कहा जाता है। 1920 का कलकत्ता कांग्रेस हिन्दी पत्रकारिता के उन्नयन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण था। इसी अधिवेशन से हिन्दी की चर्चा राष्ट्रभाषा के रूप में होने लगी। डा. रामरतन भटनागर के अनुसार यहीं से एक नये युग का आरम्भ होता है।

उक्त अध्याय के अध्ययन के क्रम में हिन्दी पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ पराधीन व स्वाधीन भारत में विशाल भारत का योगदान तथा विशाल भारत पर विविध प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। जहाँ तक मेरी समझ है, समग्रता में 'विशाल भारत' का उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के खिलाफ संगठित हो रही जनता को यहां की वास्तविक स्थितियों से अवगत कराना रहा है, जो स्वतंत्रता की माँग कर रही थी। इसलिए इस पर स्वाधीनता (राष्ट्रीय) आंदोलन, द्वितीय विश्व युद्ध, नवजागरण, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आदोलन, महात्मा गाँधी, रवींद्रनाथ टैगोर, प्रिंस क्रोपाटकिन के अराजकतावाद, थोरो, इमरसन, कांग्रेस के अंतरविरोध, आजादी से पूर्व सैन्य विद्रोह, मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा, अहिंसा, सत्याग्रह और ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों के विरोध का प्रभाव दिखता है।

द्वितीय अध्यायः उक्त अध्याय 'विशाल भारत का समसामयिक परिदृश्य' के अंतर्गत तत्कालीन राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक व सांस्कृतिक परिदृश्यों का

गहन अध्ययन किया गया है। 'विशाल भारत' ने अपने प्रवेशांक में ही कविगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर की कविता "भगवान मेरा देश जगाना! स्वतंत्रता के उसी स्वर्ग में, जहां क्लेश नहीं पाना।" की पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट कर दिया था कि उसकी दशा दिशा क्या रहनेवाली थी। राष्ट्रीय आन्दोलनों को संचालित करने की अग्रणी भूमिका में काँग्रेस सक्रिय थी। यही कारण है कि *'विशाल भारत'* काँग्रेस से गहरे स्तर तक जुड़ा हुआ था, और इस कारण *'विशाल भारत'* का तेवर राजनीतिक भी था। 1928 के बाद राष्ट्रीय आंदोलन काफी तीव्र हो जाते हैं और जनता ब्रिटिश शासन के विरुद्ध मन ही मन नए सरकार के प्रतिनिधित्व के बारे में विचार करने लगती है। *'विशाल भारत'* के प्रकाशन के समय राष्ट्रीय जागरण अपने चरम उभार पर था और जब विशाल भारत का अंतिम अंक निकला तब विश्व भर में पूंजीवाद अपना पाँव पसार चुका था। इन 36 वर्षों में पूरे विश्व में कई ऐसी घटनाएँ घटीं जिसने भारत और विश्व के मनुष्यों और प्रकृति को प्रभावित किया। इसमें से कुछ प्रमुख घटनाएँ:- 1928 में शेर-ए-पंजाब श्री लाला लाजपतरायजी की मृत्यु, 1929 में लाहौर काँग्रेस में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास होना, 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन और महात्मा गांधीजी के द्वारा दांडी मार्च, 1931 में गांधी-इरविन समझौता, 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत, 1938 में नेताजी सुभाष चंद्र बोस का कांग्रेस का राष्ट्रपति बनना और बापु से विवाद के बाद राष्ट्रपति पद से इस्तीफा, 1941 में रवींद्रनाथ ठाकुर की मृत्यु और सुभाष चंद्र बोस का अंग्रेज़ सरकार की नजरबंदी से पलायन, 1942 में क्रिप्स के आगमन पर भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत, 1943-44 में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा अन्तरिम सरकार का गठन व बंगाल में भीषण अकाल, 1945 में द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ती और लाल किले में आई.एन.ए. का ट्रायल और शिमला समझौता, 1947 में भारत की आजादी और विभाजन की त्रासदी भी। 1964 में पंडित जवाहरलाल

नेहरू जी की मृत्यु के साथ ही *'विशाल भारत'* पत्रिका भी बंद हो जाती है। उक्त घटनाओं के आधार पर सामाजिक परिदृश्यों का विश्लेषण किया गया हैं।

उक्त अध्याय का उप अध्याय आर्थिक परिदृश्य है। इसके अंतर्गत 'विशाल भारत' के आर्थिक लेखों के अध्ययन से पता चलता है कि तत्कालीन आर्थिक परिदृश्य हर हाल में भारतीयों के अहित में था। इसलिए *'विशाल भारत'* ने सर्वप्रथम ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीतियों पर प्रहार करते हुए पाठकों के सामने उसके निहित स्वार्थ का एक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता है। चरखा संघ के मंत्री शीतला सहाय ने अपने निबंध 'शक्कर का व्यवसाय' में ब्रिटिश सरकार के इस उद्देश्य का विस्तार से वर्णन किया है। श्री सहाय के अनुसार शक्कर की दुनिया में हिन्दुस्तान सारे राष्ट्रों में प्रमुख रहा है। परंतु भारत में ब्रिटिश शासन का उद्देश्य भारतीय जनता का शोषण कर यूरोप के बाजार में अपनी धाक जमाना था। ब्रिटिश सरकार ने जनता के हित को नजरन्दाज कर अपने हित के लिए भारत के साधनों का उपयोग किया। इसलिए *'विशाल भारत'* की दृष्टि में हिन्दुस्तान की ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तानियों के लिए नहीं थी क्योंकि उनके हित को पूरा नहीं कर पा रही थी। स्वाधीनता आन्दोलन के आलोक में देश का आर्थिक परिदृश्य कुछ ऐसा ही था, जिसे *'विशाल भारत'* ने प्रस्तुत किया है।

उक्त अध्याय का एक अन्य उप अध्याय सामाजिक व सांस्कृतिक परिदृश्य है। यह काल सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक सुधारों का काल है।19वीं शती के धार्मिक और सामाजिक सुधार आन्दोलन की दो धाराएँ थीं, एक धारा उदारवादियों की थी जो भारत की प्राचीन परम्परा में पूर्ण परिवर्तन की माँग करते थे। राजा राममोहन राय, महागोविन्द रानाडे, केशवचन्द्र से इत्यादि उस धारा के अग्रणी नेता थे। दूसरी धारा उनकी थी जो भारतीय परम्परा में थोड़ा हेर-फेर कर उसे फिर से प्रतिष्ठापित करना चाहते थे। शकधर चूड़ामणि, दयानंद सरस्वती, बंकिम चन्द्र, रामकृष्ण

परमहंस व विवेकानंद इत्यादि इसके प्रमुख नेता थे। पहली धारा का अविर्भाव पाश्चात्य संस्कृति के प्रादुर्भाव में हुआ तो दूसरी धारा का अविर्भाव ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज के बढ़ते हुए प्रभाव और पाश्चात्य श्रेष्ठता की प्रतिक्रिया में हुआ। '*विशाल भारत*' को भारतीय संस्कृति के प्रेरणादायक स्वरूप निर्माण के लिए एक नायक की जरूरत थी। भारतीय जनमानस में एक ऐसे नायक का चरित्र उभरे जो राजनैतिक आन्दोलनों में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित कर सके। इसलिए उसने दो नायकों का चुनाव किया, एक नायक विदेशी शक्तियों से लोहा लेने वाला और दूसरा नायक संसार में प्रेम और अहिंसा का संदेश देने वाला, मतलब शिवाजी और गौतम बुद्ध।

तृतीय अध्यायः इस शोध प्रबंध का तीसरा अध्याय बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस अध्याय में 'विशाल भारत' के संपादकत्रयी पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय' तथा पंडित श्रीराम शर्मा की संपादकीय नीति व इसके अंतर्गत पत्र में प्रकाशित साहित्य को सामने लाने की कोशिश की गयी है। तीन उप अध्याय में बंटे इस अध्याय में तीनों संपादकों की संपादकीय नीतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। यहां यह महत्वपूर्ण है कि ब्रह्मसमाजी विचारधारा से प्रभावित ऋषि पत्रकार रामानंद चट्टोपाध्याय ने विशाल भारत की संपादकीय नीतियों के निर्वहन में कभी कोई हस्तक्षेप नहीं किया और तीनों संपादकों को स्वविवेक से संपादकीय नीति निर्धारण करने दिया। आज के समय में ऐसा उदाहरण दुर्लभ है। इस पत्र के सभी संपादकों ने अपने कुछ अन्तर्विरोधों के बावजूद विशाल भारत को कांग्रेस दल की विचारधारा का संवाहक बनाया। परंतु चतुर्वेदी जी ने '*विशाल* भारत' में साम्यावदी विचारधारा से संबंधित लेखों का प्रकाशन कर एक तरह से कांग्रेस के भीतर प्रगतिशील तबके के समर्थन में आवाज उठाई जबकि अज्ञेय ने द्वितीय विश्व युद्ध को लेकर जी. एचवेल्स का समर्थन

किया तो पंडित श्रीराम शर्मा ने नेहरू के विचारों की शीतल छांव में यहां की कम्युनिस्ट पार्टी को देशद्रोही कहा। बनारसीदास चतुर्वेदी ने अपनी प्रतिभा के बल पर पत्रकारिता के क्षेत्र में भीष्म पितामह जैसी अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। विशाल भारत के प्रवेशांक में ही चतुर्वेदी जी ने इसके नाम के अनुरूप लिखा- **'शंकर' क्या से क्या हुआ, अटका उल्टा काल/लघुता का बंदा बना भारतवर्ष विशाल।** तत्कालीन समय में विशेषांक पत्रकारिता चरम उत्कर्ष पर थी। चतुर्वेदी ने 10 वर्ष के संपादन काल में साहित्यांक (अक्टूबर,1929), प्रवासी अंक (जनवरी, 1930), कला अंक (जनवरी,1931), साहित्यांक (मई,1931), पद्म सिंह शर्मा विशेषांक (अगस्त, 1932), कहानी अंक (जनवरी, 1933), राष्ट्रीय अंक (अप्रैल,1936),महिला अंक (सितंबर,1936), साहित्यांक (अक्टूबर, 1937)। विशाल भारत के इन विशेषांकों का साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व राजनीतिक वैशिष्ट्य है। 'विशाल भारत' को समृद्ध करने में चतुर्वेदी जी ने महात्मा गांधी, सी.एफ. ऐण्ड्रयूज, कविगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर से अपने निजी संबंधों को भुनाया। चतुर्वेदी जी ने इस पत्र से एक नया आन्दोलन प्रारंभ किया, जो 'कस्मै देवाय' नामक आंदोलन के रूप में प्रचलित हुआ। पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, चंद्रगुप्त विद्यालंकार व रामधारी सिंह दिनकर समेत अन्य विद्वानों ने 'कस्मै देवाय' का उत्तर 'जनता जनार्दनाय' के रूप में दिया। जो लेखक साहित्य को एक कला मानते थे, वे इस आह्वान के विरुद्ध खड़े दिखे। यह आह्वान एक प्रकार का प्रगतिशील लेखन का आन्दोलन था, जो आगे चलकर संभवतः प्रगतिशील लेखकों के लिए बीज का कार्य कर गया। कस्मै देवाय की तर्ज पर चतुर्वेदी जी ने 'चौबेजीकी चाय' कालम की शुरुआत की। चतुर्वेदी जी ने पत्रकार हितों की सदैव रक्षा की। उन्होंने वसंतोत्सव मनाने की योजना, जनपदीय भाषाओं के उद्धार की योजना, साहित्यिक सगाई, शहीदों का श्राद्ध और हिंदी साहित्य के प्रचार समेत अनेक योजनाओं को जन्म दिया था। उन्होंने इस पत्र के माध्यम से नवोदित लेखकों की प्रतिभा को पहचाना और उन्हें साहित्यिक फलक पर पहचान दिलाई।

इनमें रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंश राय बच्चन, सोहनलाल द्‌विवेदी, अज्ञेय तथा कालीदास नाग समेत अन्य है। इसीलिए रामविलाश शर्मा चतुर्वेदी जी को लेखक कम औप संपादक अधिक मानते हैं।

उक्त अध्याय का एक उप अध्याय 'अज्ञेय' की संपादकीय नीति है। 'अज्ञेय' का 'विशाल भारत' से संपादकीय संबंध मात्र 14 महीने तक रहा। लेकिन इस अल्पावधि में 'विशाल भारत' के रूप और स्तर में उल्लेखनीय परिवर्तन आया। साहित्यिक और कलात्मक स्तर में उन्नति हुई। 'अज्ञेय' के सम्पादन में विशाल भारत का गांधी विशेषांक (अक्टूबर,1938) निकला। इस विशेषांक में देश-विदेश के लेखकों की रचनाएँ छपी परंतु गांधी जी के करीबी रहे और विशाल भारत के आदि संपादक बनारसीदास चतुर्वेदी की रचनाएँ नहीं छपी। अज्ञेय के सम्पादन में निकले '*विशाल भारत*' के अंक देखें तो स्पष्ट होगा कि विवेच्य काल में राष्ट्रभाषा से संबंधित समस्याओं, उद्‌योग, शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक सुधार के कानूनों, संस्कृति और मनोविज्ञान से संबंधित लेख अधिक महत्व पाने लगे। पपीता, साँप व गाय आदि पर लेख छपने कम हो गए। यात्रा वृतांत पहले की तरह ही छप रहा था बल्कि अधिक छपने लगा था। अज्ञेय यह मानते थे कि सम्पादन कार्य़ रचनाधर्मिता को बाधित करता है। वे विशाल भारत का सम्पादक भी अनिच्छापूर्वक ही बने थे। हालाँकि विशाल भारत में रहते हुए ही उन्होंने अपनी अनमोल कृति शेखर एक जीवनी भाग-1 को मूर्त रूप दिया था। मार्च 1939 में उन्होंने विशाल भारत छोड़ दिया। इसके पीछे उन्होंने निजी कारण बताया था लेकिन इसका एक कारण हिंदी राष्ट्रभाषा के नाम पर रामानंद बाबु से हुआ विवाद तथा विशाल भारत की आंतरिक राजनीति थी।

उक्त अध्याय का एक अन्य उप अध्याय पंडित श्रीराम शर्मा की संपादकीय नीति है। श्रीराम शर्मा 'विशाल भारत' से शुरू से बतौर लेखक जुड़े रहे परंतु 1939 से

1964 तक वे इस पत्र के प्रधान संपादक रहे। पंडित जी ने 25 साल तक विशाल भारत का अवैतनिक संपादन किया। पंडित जी के संपादन में रवींद्र अंक, यूरोप अंक, एण्ड्रयूज अंक, पूजा अंक, दक्षिण भारत अंक निकला। शर्मा जी के संपादन में शिकार, पशु-पक्षी, अनुवाद, कृषि, रेखाचित्र, आदि विषयों के अतिरिक्त राजनीति, प्रकृति, कथा, जीवनी, निबंध व साक्षात्कार संबंधी रचनाएँ खूब छपी। श्रीराम शर्मा ने हिटलर, मुसोलिनी व लेनिन के विरोध में लेख छापकर यह बताया कि ये क्रूर शासक मानवता के दुश्मन है।

चतुर्थ अध्यायः उक्त अध्याय भाषा की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। इस अध्याय के अंतर्गत 1928 से 1964 तक प्रकाशित 'विशाल भारत' के समस्त लेखों का आकलन करते हुए भाषा संबंधी प्रमुख लेखों की समीक्षा विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत की गयी है। इस विश्लेषण के दौरान छपे हुए लेखों में तत्कालीन घटनाओं के साथ भाषा के संबंधों की पड़ताल की गयी है और इससे यह जानने का प्रयास किया गया है कि तत्कालीन भारतीय समाज भाषा को लेकर किस चिंतन के दौर से गुजर रहा था। और पराधीन भारत में शुरू हुआ राष्ट्रभाषा आंदोलन स्वाधीन भारत तक पहुँचते-पहुँचते कैसे राजभाषा में तब्दील हो गया। रामानंद चट्टोपाध्याय हिन्दी को राष्ट्रभाषा नहीं मानते थे। लेकिन वे हिन्दी की व्यापकता से अनभिज्ञ नहीं थे। उन्हें इस बात का अनुभव हुआ कि बिना हिन्दी का आश्रय लिये उनका उद्देश्य अधूरा रह जायगा।

'विशाल भारत' के विज्ञापन में भी इस बात का दावा किया गया है कि वह राष्ट्रभाषा हिन्दी का एक उत्तम मासिक पत्र है। साथ ही राष्ट्रभाषा हिंदी से संबंधित कई कार्टून छापकर इस बात का दावा करता रहा कि देश को एक सूत्र में पिरोने का काम हिंदी ही कर सकती है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने तथा हिन्दी के प्रचार प्रसार में हिन्दी साहित्य सम्मेलन काफी सक्रिय था। विशाल भारत ने

हिन्दी-साहित्य- सम्मेलन की गतिविधियों के बारे में पाठकों को जानकारी देने के साथ-साथ सम्मेलन का समयानुरुप मार्गदर्शन भी किया। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान क्रांतिकारियों के पास आंदोलन को सर्वव्यापी बनाने के लिए जो सर्वप्रमुख हथियार था, वह भाषा ही थी। यहीं कारण है कि कश्मीर से कन्याकुमारी व पोरबंदर से अरुणाचल तक हिन्दी व गैर हिन्दी भाषी, दोनों वर्गों के विद्वानों के द्वारा राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की स्थापना एवं उसके उत्थान तथा उसे सर्वग्राही बनाने की अथक कोशिश की भी पड़ताल इस पत्रिका में छपे लेखों के माध्यम से की गयी है। इस सन्दर्भ में कन्हैयालाल शास्त्री के लेख 'शिक्षा सभ्यता और हमारे विद्यापीठ', प्रोफेसर ललिता प्रसाद सुकुल एम.ए. का लेख 'हिन्दी ही क्यों', महात्मा गाँधी के लेख 'हिन्दी बनाम अंग्रेजी', पंडित नेहरू के लेख 'हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होनी चाहिए', महादेव देसाई का लेख 'राष्ट्रदेवी हिन्दी-माता की पूजा' बनारसीदास चतुर्वेदी के लेख 'बंग प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन', 'हिन्दी प्रेमियों से प्रार्थना', अज्ञेय के लेख 'भाषा की कसौटी' तथा भाषाविद् सुनीति कुमार चाटुर्ज्य का लेख 'भारतीय राज्य और हिन्दी', पुरुषोत्तम दास टंडन का 'दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार', श्री सिद्धगोपाल काव्यतीर्थ का 'दक्षिण-भारत हिन्दी-प्रचार', श्री हरिहर शर्मा का 'दक्षिण में हिन्दी प्रचार' समेत भाषा संबंधी अन्य लेख उल्लेखनीय है।

उक्त अध्याय के उप अध्याय में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में गैर हिंदी भाषी लेखकों के योगदान की चर्चा की गयी है। इस दृष्टि से 'विशाल भारत' का काम अन्य समकालीन पत्रिकाओं से अलग है। 'विशाल भारत' ने हिंदी-बांग्ला के बीच सेतु बंधन का काम करने के साथ-साथ देश की भिन्न संस्कृतियों से हिंदी जनमानस का परिचय किया। इस क्रम में 'विशाल भारत' का दक्षिण भारत अंक उल्लेखनीय है। इस अंक का मकसद दक्षिण भारत में चलाये जा रहे हिन्दी आंदोलन की सफलता, हिन्दी प्रचार सभा के जरिये दक्षिण भारत तथा उत्तर भारत

के बीच बने सांस्कृतिक सेतु के विकास के बारे में पाठकों को बताना था। दक्षिण भारत अंक में रांगेय राघव समेत कई दक्षिण व उत्तर भारतीय लेखकों के लेख छपे। इस अंक में रांगेय राघव की कविता 'वन्दना', एन. ललिताम्बिका अन्तर्जनम् की कहानी 'किस्मत का खेल', आचार्य पी. शेषाद्रि का 'केरलीय संस्कृति', श्री आर.एस. शर्मा का 'दक्षिणोत्तर संस्कृति', चंद्रबली पांडेय का 'दक्खिनी की अवहेलना', कैलाशचन्द्र शास्त्री का 'दक्षिण भारत में जैन धर्म', डा. लंका सुंदरम का 'तेलगु साहित्यम', भालचन्द्र पाण्डेय का 'हिन्दी प्रचार की आगाऊ टुकड़ी', भदन्त आनन्द कौसल्यायन का 'दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभा का अगला कदम' समेत अन्य लेख छपे। इन लेखों के माध्यम से सुधी पाठकों को दक्षिण भारत की भाषाई संस्कृति के बारे में पता चला। इस अंक के सम्पादकीय निवेदन में सेंगर जी ने लिखा है कि आज जब हम उत्तर-भारतके पढ़े लिखे लोगोंके मुँह से दक्षिण-भारतीयोंके लिए मद्रासी और वहाँ की भाषाओं के लिए मद्रासी भाषा जैसे प्रयोग सुनते हैं, तो अज्ञान से अधिक हमें उनकी मूर्खता पर दया आती है। और ऐसे ही लोग सार्वजनिक मंचों से गला फाड़-फाड़कर भारत की अखण्डता तथा सांस्कृतिक एकता की दुहाई देते नहीं थकते। इसी प्रतिक्रिया ने हमें प्रस्तुत अंक निकालने की प्रेरणा दी।

उक्त अध्याय के उप अध्याय 'हिंदी संबंधी वाद विवाद' में हिंदी राष्ट्रभाषा को लेकर हुए विवादों की चर्चा की गयी है। चतुर्वेदी जी समग्र भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा के तौर पर मान्यता दिलाने को प्रतिबद्ध थे परंतु किसी भी राज्य या व्यक्ति पर जबरन हिंदी थोपे जाने के खिलाफ थे। उनके मित्र पंडित श्रीराम शर्मा भी इस आशय में उन्हीं के अनुगामी थे परंतु अज्ञेय का मत इससे भिन्न था और वे हर हाल में हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाना चाहते थे। इसके लिए वे विशाल भारत के संचालक रामानंद बाबू तथा समेत रविवासर व देश पत्रिका में

छपने वाली राष्ट्रभाषा हिंदी विरोधी टिप्पणियों का माकूल जवाब देते रहे। इस आशय में अज्ञेय व रामानंद बाबू के बीच हुए पत्र व्यवहार उल्लेखनीय है। रामानंद बाबू प्रवासी प्रेस के मालिक थे और इसी प्रेस विशाल भारत (हिन्दी), माडर्न रिव्यू (अंग्रेजी) और प्रवासी (बांग्ला) का प्रकाशन होता था। लेकिन विशाल भारत द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रभाषा आंदोलन का इन दोनों पत्रिकाओं द्वारा विरोध किया जाता था।

पाँचवा अध्यायः प्रस्तुत अध्याय 'विशाल भारत और हिन्दी साहित्य' के अंतर्गत 'विशाल भारत' में 1928 से 1964 तक सिर्फ हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधा कहानी, कविता, शोध एवं आलोचना का सिर्फ प्रकाशन ही नहीं हुआ है बल्कि वैश्विक साहित्य को भी भारतीय पाठकों के लिए सुगमता पूर्वक उपलब्ध कराया गया है। विशाल भारत ने हिंदी साहित्य के तत्कालीन प्रमुख कहानीकारों को वह स्थान दिया है, जिससे शीर्ष रचनाकार पाठकों तक पहुंच पाये हैं। विशाल भारत ने हिंदी साहित्य की कालजयी कविता-कहानियों का प्रकाशन किया है। जनता के साहित्य की पहली मांग है कि वह साहित्य अपने समय की जनता में सांस्कृतिक और राजनीतिक चेतना जगाये। विशेषतः पराधीन देश के साहित्य से यह मांग तो की ही जाती है, क्योंकि पराधीन देश के शासक शासन के लिए उस देश की भाषा को दरिद्र बताते हैं तो कभी उस देश की संस्कृति को। इसलिए विशाल भारत में भी साहित्य संबंधी रचनाएँ प्रकाशित हुई है, उसका उद्देश्य राजनीतिक आंदोलन को तेज करना था। इस पत्र ने तत्कालीन भारतीय समाज में भारतीय नारी की दुर्दशा पर करारा प्रहार किया। पर्दा प्रथा का विरोध किया है और राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने हेतु महिलाओं का आहवान किया है। उक्त बिंदुओं को केंद्रित कर इस पत्र ने अपने जीवनावधि में 7000 से अधिक कहानियां छापी। इस क्रम में रवीन्द्रनाथ ठाकुर की पहली कहानी 'लेन देन', (विशाल भारत, अप्रैल,1928), दूसरी

कहानी 'मुझा' (विशाल भारत, मार्च 1929), प्रेमचंद की कहानी 'अग्नि समाधि' (जनवरी 1928), जैनेंद्र की कहानी 'खेल', चोरी (जुलाई 1928), बलराज साहनी की कहानी शहजादों का ड्रिंक्स (फरवरी 1937) तथा कुमुदिनी धारावाहिक उपन्यास छपा। इस क्रम में जनवरी,1933 का कहानी अंक भी उल्लेखनीय है। कहानी अंक में सुदर्शन की 'संसार की सबसे पहली कहानी' तथा माखनलाल चतुर्वेदी की 'कहानी' शीर्षक से कविता छपी, जो कथा के आदि से अंत तक के मर्म को बयां करती है। इसके साथ ही कहानी अंक में प्रेमचंद का 'कायर', विक्टर ह्यूगो का 'जेनी', रवींद्रनाथ ठाकुर का 'कहानी', सुदर्शन का 'प्रेमतरू', विशम्बरनाथ शर्मा कौशिक का 'दीपावली', मिर्जा अजीम बेग चुगतई का 'कोलतार', आचार्य चतुरसेन शास्त्री का 'जैसलमेर की राजकुमारी', जैनेंद्र का 'रूकिया', 'बुढ़िया', अज्ञेय का 'हरिति', चंद्रगुप्त विद्यालंकार का 'भाई-बहन या पति-पत्नी' समेत अन्य कहानियां छपी। साहित्यांक (अक्टूबर 1937) में अज्ञेय की कहानी 'विपगाथा' तथा अन्य अंकों में चेखक की कहानी 'डार्लिंग', रवींद्रनाथ टैगोर की कहानियां 'त्याग', 'एक बरसाती कहानी', 'पोस्टमास्टर', 'सजा', 'छुट्टी', 'दान-प्रतिदान', पुश्किन की कहानी 'तूफान', एवं चंद्रगुप्त विद्यालंकार की कहानी क ख ग तथा कामकाज आदि प्रकाशित हुई। साथ ही इस पत्र में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास 'वाणभट्ट की आत्मकथा' तथा आदित्य अवस्थी के उपन्यास 'राष्ट्रनायक' समेत अन्य उपन्यास भी धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुए।

इस अध्याय के उप अध्याय 'कविता' के अंतर्गत विशाल भारत के समस्त अंकों में छपी छोटी-बड़ी 18 हजार से अधिक कविताओं का अध्ययन किया गया है। भारतवर्ष पराधीन था। ब्रिटिश शासन भारतीय संस्कृति को हेय दृष्टि से देखते थे तथा समस्त भारतीय समाज को अपनी संस्कृकि में ढाल देना चाहते थे। इसलिए 'विशाल भारत' ने कविताओं के माध्यम से अतीत का यशोगान किया और जनता

में पले भ्रम को तोड़ने का काम किया। इसके पहले अंक में 'विशाल भारत' शीर्षक से अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध का गीत प्रकाशित हुआ, जिसकी पंक्तियां कुछ इस प्रकार है - 'विधि-कान्त-कर सँवारा/संसार का सहारा/जय जय विशाल-भारत भुवनाभिराम प्यारा।' (जनवरी,1928) इसलिए मैथिलीशरण गुप्त उसी अंक में लिखते हैं- 'उठ, ओ वृहद वृहद्, विराट, विशाल/उठ अमिताभ, लाभ कर निजपद, लुटा लक्ष्य पर लाल' प्रकाशित हुई। इस पत्र में मैथिलीशरण गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी, रामधारी सिंह दिनकर तथा सुभद्राकुमारी चौहान जैसे राष्ट्रीय कवियों की कविताओं के साथ-साथ छायावादी कवियों के गीत भी छपते थे। हरिवंश राय बच्चन की कविताओं को चतुर्वेदी जी ने ही स्थान दिया। विशाल भारत के कालखण्ड में कविता में छायावाद का सांध्यकाल तथा प्रगतिवाद का उषाकाल था, जिसमें चतुर्वेदी जी, अज्ञेय तथा पंडित श्रीराम शर्मा ने सैकड़ों नवांकुर कवियों को साहित्यिक फलक पर स्थापित करने का कार्य किया।

उक्त अध्याय का उप अध्याय शोध व आलोचना है। इस पत्र ने अधिकारिक विद्वानों के साहित्य व पत्रकारिता संबंधी लेख प्रकाशित कर कई महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर किया है। ब्रजेंद्रनाथ बंदोपाध्याय, अंबिकाप्रसाद वाजपेयी, पंडित श्रीराम शर्मा, विष्णुदत्त शर्मा, रुद्रदत शर्मा, लक्ष्मण नारायण गर्दे के हिंदी पत्रकारिता संबंधी शोध परक लेख प्रकाशित हुए। साहित्य संबंधी लेख 'कवि सम्मेलन असफल क्यों होते हैं', 'छायावाद और प्रगतिवाद का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण', 'ये लावारिस दोहे', 'संस्कृत के सुभाषित', 'बनजारों के गीत', 'भाषा तथा भाषण', 'युग साहित्य', 'हमारा साहित्य और साम्यवाद', 'प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता', 'भारतीय छायावाद की आलोचना', 'लेनिन साहित्य के बारे में', 'हमारा साहित्य और उसके गुण दोष' तथा 'पन्त और प्रकृति' समेत हजारों लेख प्रकाशित कर हिंदी पत्रकारिता व साहित्य की श्रीवृद्धि की।

छठवां अध्यायः प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत 'विशाल भारत' में प्रकाशित किसान व मजदूर, कृषि एवं पर्य़ावरण, व्यापार, मनोवैज्ञानिक, स्त्री, दलित व भाषा समेत अन्य विविध लेखों का अध्ययन व विश्लेषण किया गया है। 'विशाल भारत' का स्वरूप शुद्ध साहित्यिक पत्रिका का नहीं रहा, यद्यपि उसका साहित्यिक मूल्य भी है जिसकी चर्चा यथा स्थान की गयी है। राजनीतिक आंदोलन से इसका सीधा संबंध था। विशाल भारत ने साहित्येतर सैकड़ों लेख प्रकाशित किये, जिसका मकसद ग्रामीण भारत को आर्थिक व सामाजिक रूप से सुदृढ़ करना था। इसमें महिला मण्डल तथा हमारे ग्राम के अंतर्गत प्रकाशित साहित्य उल्लेखनीय है। जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, बी.एल. तथा शंकर सहाय सक्सेना के व्यापार संबंधी लेख क्रमशः 'ग्राम संगठन और आर्थिक समस्या' तथा 'ग्राम्य सुधार और ग्रामीण धंधे में' ग्राम संगठनों की आवश्यकता और उसके कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। किसान व मजदूर संबंधी लेख के क्रम में मजदूर दिवस, मजदूरों का मे-डे महापर्व, भारत के मजदूर और श्रम कानून, रूस की बोल्सेविक क्रांति, भारत के गाँवों में रोजगार की समस्या, अहमदाबाद के मजदूर आदि हैं। पंडित बनारसीसादस चतुर्वेदी तथा पंडित श्रीराम शर्मा, दोनों संपादकों का कृषि-बागवानी तथा पशु संसाधन के प्रति विशेष लगाव था। चतुर्वेदी जी को स्वास्थ्य पर लेख देने का बड़ा शौक था। पहलवानों पर, चिकित्सा विषय पर लेख अवश्य देते रहते थे। उसी तरह से यात्रा संबंधी लेख भी खूब छापते थे। तब डाबर पंचाग, रिलीफ पंचाग की समालोचना भी छपती थी। विशाल भारत के अलग-अलग अभिरूचि वाले पाठक थे। व्यापारी वर्ग व्यापार संबंधी लेखों के लिए इस पत्र का पाठक था। इस क्रम में 'भारत में बनस्पति पदार्थ का आयात', 'तिलहन उत्पादक भारत और विश्व बाजार', तथा 'बंगाल का जूट उद्योग', 'भारतीय उद्योग धंधों का संरक्षण', 'समृद्धि का समाजशास्त्रःहथकरघा उद्योग' समेत अन्य लेख उल्लेखनीय है। श्रीराम शर्मा ने कृषि व पर्यावरण मुद्दों पर अधिकारिक विद्वानों के लेखों को प्रकाशित करने के

साथ उक्त विषय पर हजारों लेख स्वयं लेख लिखे। इनमें 'हमारी गायें', 'गायें अधिक दूध कैसे दें', 'भारत के पशु-पक्षी', 'जंगल के जीव', 'पपीता', 'कपास की खेती कैसे करें', 'गाय गांव और गांधी', 'गाय की पहचान', 'अखिल भारतीय पशु प्रदर्शनी', 'पशु बाल न खाने पाय', 'चारे में विटामिन ए की कमी', 'चारे में दुर्भिक्ष का एक उपाय', 'गो वंश की उन्नति' आदि प्रमुख हैं। 'विशाल भारत' में मनोविज्ञान से संबंधित कई लेख व कहानियां छपी। इसके साथ ही 'साम्यवाद', 'मार्क्सवाद' व 'गांधीवाद' से संबंधित एम.एन राय, बनारसीदास चतुर्वेदी, अज्ञेय, जैनेंद्र, आचार्य विनोवा भावे, प्रेमचंद समेत अन्य लेखकों के अनेकों लेख छपे। इस पत्र के प्रत्येक अंक में महिला उत्थान से संबंधी लेख छपे। इसके लिए बकायदा एक निर्धारिता कालम 'महिला मंडल' के नाम से होता था। 1936 में इसने 'महिला विशेषांक' निकाला। इसी अंक में श्रीमती कमला चटर्जी द्वारा लिखित अंतरराष्ट्रीय महिला कांफ्रेस जैसा महत्वपूर्ण लेख छपा। तत्कालीन भारतीय समाज के लिए यह एक अपवादस्वरूप सूचना थी कि 1888 ई. में स्थापित अमेरिका की 'अंतरराष्ट्रीय महिला समिति' के साथ 'भारत राष्ट्रीय महिला सभा' सम्बद्ध है और उसे समान वोटाधिकार प्राप्त है। महात्मा गांधी ने भारतीय स्त्रियों को राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल किया था। श्रीमती वासंती देवी, श्रीमती सरोजनी नायडू, मिसेज कमला देवी चट्टोपाध्याय, श्रीमती रूक्मिणी देवी लक्ष्मीपति, अहमदाबाद की अनुसूया बहन आदि उनकी वीर सेनानियों में थी। इन सबके महत्वपूर्ण कार्यों और व्यक्तित्वों का परिचय देकर विशाल भारत ने देश की नारी समाज को जागृत और प्रेरणा देने का कार्य किया। उक्त शोध सार के आलोक में हम कह सकते हैं कि विशाल भारत ने अपने जनतांत्रिक चरित्र को प्रस्तुत करते हुए भारतीय समाज के समक्ष 'कस्मै देवाय' (किसके लिए लिखे) तथा गाँव, गरीब व गाँधी की अवधारणा को प्रस्तुत किया तथा 'चाय चक्रम' के माध्यम से समूह चर्चा की संस्कृति को भी प्रसारित करने की कोशिश की ताकि जन मन तक साहित्य एवं समाज चर्चा पाठक को

आंदोलित कर सकें। विशाल भारत ने अपने नैतिकता प्रधान उद्देश्य को पाठक के समक्ष रखते हुए 'अश्लील साहित्य' का पुरजोर विरोध किया। चतुर्वेदी जी ने अश्लील साहित्य के विरोध के लिए रवीन्द्रनाथ ठाकुर व गाँधी से लेख भी लिखवाये। विशाल भारत ने भारत की विशालता को ध्यान में रखते हुए पूरे पत्र को भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक पहलूओं की महत्ता को कविता कहानी एवं लेखों के माध्यम से प्रकट करने की कोशिश की है। विशाल भारत पत्र की स्थापना है कि भारत अपने इतिहास, वर्तमान एवं भविष्य में विशाल था, है और रहेगा। इस स्थापना की समीक्षा करना भी इस शोध का ध्येय रहा है। 'विशाल भारत' में प्रकाशित प्रमुख कविता, कहानी, शोध, आलोचनाओं एवं आलेखों को इस दृष्टि से भी विश्लेषित कर शोध प्रबंध में प्रस्तुत किया गया है।

शोधार्थी
जयप्रकाश मिश्र
प्रेसीडेन्सी विश्वविद्यालय